शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनवाद के सन्दर्भ में निराला के काव्य का मूल्यांकन

कण्व कुमार मिश्र (शोधार्थी)
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्यकार की करुणावान दृष्टि हमेशा पीड़ित मानवता के दु:खदर्द के साथ जुड़ी रही है। उसकी समस्याओं को उजागर करना साहित्यकार का मुख्य ध्येय रहा है। शोषण आधारित समाज व्यवस्था से विद्रोह करना साहित्यकार अपना परम कर्तव्य समझता है। कविकर्म के दौरान आक्रोश का फूट पड़ना सीई ओर इंगित करता है। इसी आक्रोश को जनवाद की संज्ञा दी गयी है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के फक्कड़पन से उपजे काव्य में जनवादी स्वरों को अभिव्यक्ति मिली है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके काव्य में जनवाद का मूल्यांकन किया गया है।

भूमिका

जनवाद कोई शब्द नहीं है बल्कि हर रचनाकार की जिम्मेदारी/पूँजी है कि वह अपनी रचना में जन समुदाय व उसकी विसंगति को प्रस्तुत करे। और जो कवि व रचना जितनी जनवादी होगी, वह कवि/रचना उतना ही लोकप्रिय होगा। इस सम्बन्ध में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी ने लिखा है :

''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें रचित उद्देश्य का मर्म होना चाहिए।।''

उपर्युक्त पंक्तियों के आलोक में निराला जी के काव्य का मूल्यांकन करते हैं तो उनके काव्य में जनवादी तत्व प्रचुरता से मिलता है। यद्यपि निराला छायावाद के आधार स्तम्भ हैं, लेकिन उनका काव्य एकांगी नहीं रहा है। उन्होंने अपने सृजन के दौरान जमीनी सच्चाइयों से मुंह नहीं मोड़ा है। जनवाद के पक्षधर होते हुए उन्होंने सामाजिक जीवन की विसंगतियों को उजागर किया है। सामाजिक विषमता पर आक्रोश व्यक्त करना, गरीबों एवं दीन असहाय व्यक्तियों की दीन-हीन दशा का चित्रण करते हुए उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करना, पूंजीवाद को अस्वीकार करना निराला के काव्य की प्रमुख विशेषता रही है।

निराला के काव्य में जनवाद

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' साहित्य के महाप्राण हैं। उन्हें जहाँ भी विसंगति दिखाई दी उसका उन्होंने खुलकर विरोध किया। उनके काव्य का मूल स्वर क्रान्तिकारी एवं विद्रोही भावनाओं से युक्त है। यथा :

"चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अड़े हुए।।"1

'वह तोडती पत्थर' कवि की बहुचर्चित रचना है जिसमें उन्होंने इलाहाबाद जैसे प्रतिष्ठित शहर पर भी करारा प्रहार किया है, यथा :

"वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार

श्याम तन, नत नयन
कर्मरत मन
गुरु हथौडा हाँथ
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु अट्टालिका प्रकार।।''[2]

उपर्युक्त पूरी कविता जनवाद से ओत-प्रोत है। कवि यह बताना चाहते हैं कि श्रमिकों की कार्य दशाएं अत्यन्त शोचनीय हैं। जेठ की तपती दोपहर में महिला पत्थर तोड़ रही है, जबकि पूँजीपति विलास के साधनों से सम्पन्न हैं तथा इतने निष्ठुर हैं कि वे अपने भवन के छायादार पेड़ के नीचे बैठने की सुविधा भी नहीं दे सकते हैं। वास्तव में दीन-हीन व्यक्तियों के प्रति इतनी गहरी संवेदना निराला जैसा जनवादी कवि ही अभिव्यक्त कर सकता है। 'भिक्षुक' कविता में आपने जैसा यथार्थवादी चित्रण किया है।

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर है एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठीभर दाने को- भूख मिटाने को मुँह फटी-पुरानी
झोली को फैलाता
वह आता।"[3]

निराला जी का सम्पूर्ण जीवन अभावों में बीता पर उन्होंने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाए। उनकी प्रसिद्ध कविता 'कुकुरमुत्ता' इसका जीवंत प्रमाण है। पूँजीपतियों पर प्रहार करते हुए वे लिखते हैं :

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत, जो पाई खुशबू रंगों आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।"[4]

ये तेरा सूर्ख चेहरा गरीबों का खून चूसकर लाल हुआ है। ऐसा कह कर निराला ने पूंजीपतियों को आइना दिखाया है। निराला जी ओज और औदात्य के कवि हैं। उन्होंने भारतीयों के हृदय में सकारात्मक ऊर्जा भरने का कार्य भी किया है। उन्होंने कहा कि अंग्रेज अजेय नहीं है। उन्हें भी पराजित किया जा सकता है। पर आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अस्तित्व और अपनी संस्कृति को जानें कि हम कौन हैं। 'जागो फिर एक बार' कविता में कुछ ऐसा ही संदेश है।

"शेरों की माँद में आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार
तुम हो महान तुम सदा ही महान
है नश्वर यह दीन भाव
पदराज भर भी है नहीं पूरा विश्वभार
जागो फिर एक बार।।"[5]

उन्होंने तत्कालीन समाज को अभिप्रेरित करते हुए कहा है कि अन्याय से डरने की जरूरत नहीं है बल्कि लड़ने की जरूरत है और हमारी विजय निश्चित है :

"होगी जय होगी, जय,
हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम
के बदन में हुई लीन।।"[6]

निष्कर्ष

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं, किन्तु उनका सम्पूर्ण काव्य जनवाद की फेरी लगा रहा है। निराला एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जो शोषण मुक्त हो। जहाँ अन्याय एवं अत्याचार के लिए कोई स्थान न हो। वे समता, स्वातंत्र्य और न्याय के समर्थक थे। सामाजिक विषमता को हर स्तर पर समाप्त करना चाहते थे।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 निराला ग्रन्थावली - भाग दो, निराला, पृष्ठ 325

2 अनामिका, द्वितीय संस्करण, 1938, निराला, पृष्ठ 124

3 परिमल, निराला, पृष्ठ 23

4 बादल राग, संकलन परिमल, निराला, पृष्ठ 138

5 जागो फिर एक बार, निराला, पृष्ठ 48

6 राम की शक्ति पूजा, निराला, पृष्ठ 98